



Yojna IAS

G-32 NOIDA SECTOR-02  
UTTAR PRADESH (201301)  
CONTACT NO. +8595907569

## CURRENT AFFAIRS



**Date - 30 March 2022**

### MRSAM

- हाल ही में रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (DRDO) ने ओडिशा के तट से दूर एकीकृत परीक्षण रेंज, चाँदीपुर में मध्यम दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल (MRSAM) के सैन्य संस्करण के दो सफल उड़ान परीक्षण किये।
- ये परीक्षण उच्च गति वाले हवाई लक्ष्यों के विरुद्ध लाइव फायरिंग परीक्षणों का हिस्सा थे। पहला प्रक्षेपण एक मध्यम ऊँचाई वाली लंबी दूरी के लक्ष्य को रोकना था और दूसरा प्रक्षेपण कम ऊँचाई वाले कम दूरी के लक्ष्य को क्षमता प्रदान करने के लिये था।
- भारतीय सेना के लिये मध्यम दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल (MRSAM) का पहला परीक्षण वर्ष 2020 में किया गया था।

#### **MRSAM का सैन्य संस्करण:**

- यह भारतीय सेना के उपयोग हेतु रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO) तथा इज़रायल एयरोस्पेस इंडस्ट्रीज़ (IAI) द्वारा संयुक्त रूप से विकसित सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल प्रणाली है।
- इसमें एक कमांड और कंट्रोल पोस्ट, मल्टी-फंक्शनरडार तथा मोबाइल लॉन्चर सिस्टम शामिल हैं।

#### **‘मीडियम रेंज सरफेस टू एयर मिसाइल’ (MRSAM):**

- यह एक त्वरित प्रतिक्रिया वाली सुपरसोनिक मिसाइल है, जिसे दुश्मन के हवाई खतरों, जैसे- मिसाइल, विमान, गाइडेड बम और लड़ाकू विमान आदि को बेअसर करने के लिये विकसित किया गया है।
- सुपरसोनिक मिसाइल की गति ध्वनि की गति (मैक 1) से अधिक होती है, किंतु वह माइक-3 से तेज़ नहीं हो सकती हैं।
- सेना, नौसेना और वायु सेना के लिये इसके अलग-अलग संस्करण विकसित किये गए हैं।

- मई 2019 में भारतीय नौसेना, DRDO और IAI ने 'मीडियम रेंज सरफेस टू एयर मिसाइल' (MRSAM) के नौसैनिक संस्करण का पहला परीक्षण किया था।
- यह बराक एयर एंड मिसाइल डिफेंस सिस्टम (Barak Air and Missile Defence System-AMD) का भूमि आधारित संस्करण है।
- भारत द्वारा इज़रायल से बराक एएमडी (Barak AMD) की खरीद की गई है। इसे विभिन्न खतरों से अपने आर्थिक क्षेत्रों और रणनीतिक संस्थानों की रक्षा हेतु इज़रायल द्वारा डिज़ाइन और विकसित किया गया था।
- मिसाइल की प्रबंधन प्रणाली लक्ष्य को ट्रैक करने और सही ढंग से पहचानने हेतु रडार का उपयोग कर दूरी की गणना करती है तथा इंटरसेप्शन (Interception) पर लिये जाने वाले निर्णय हेतु कमांडर को सभी जानकारी उपलब्ध कराती है।
- यह मिसाइल 5 मीटर लंबी है और लगभग 275 किलोग्राम वज़न की है।
- यह अपनी उड़ान को स्थिर करने और इसे गतिशीलता प्रदान करने हेतु फिन्स (Fins) और कैनर्ड (Canards) से युक्त है।
- इस मिसाइल को एक ठोस प्रणोदन प्रणाली के साथ 'थ्रस्ट वेक्टर कंट्रोल सिस्टम' द्वारा संचालित किया जाता है।
- यह 70 किलोमीटर की सीमा तक कई लक्ष्यों को एक साथ भेद सकती है।

## कोयना बाँध

- हाल ही में भारत के नियंत्रक और महालेखक परीक्षक (CAG) ने महाराष्ट्र में एक अधूरी जलविद्युत परियोजना को संशोधित प्रशासनिक स्वीकृति देने में देरी के बारे में जानकारी दी है। इस देरी के कारण छह साल से अधिक समय तक धन का आवंटन अवरुद्ध रहा है।
- महाराष्ट्र सरकार के जल संसाधन विभाग (WRD) ने वर्ष 2004 में कोयना बाँध के बाएँ किनारे पर 2×40 मेगावाट (MW) जलविद्युत परियोजना के निर्माण के लिये प्रशासनिक स्वीकृति प्रदान की थी।

### कोयना बाँध:

- कोयना बाँध महाराष्ट्र का सबसे बड़ा बाँध है, यह सतारा ज़िले के कोयाना नगर में स्थित है।
- यह पश्चिमी घाट में चिपलून और कराड के बीच राजकीय राजमार्ग पर स्थित है। कोयना बाँध कोयना नदी पर बनाया गया एक मलबा-कंक्रीट बाँध है, कोयना नदी सहयाद्रि पर्वत शृंखलाओं के एक हिल-स्टेशन महाबलेश्वर से निकलती है।
- कोयना बाँध पर कार्य वर्ष 1951 में शुरू किया गया था तथा पहली बार वर्ष 1962 में टरबाइन को स्थापित करने के लिये कार्य शुरू हुआ था।
- वर्तमान में कोयना जलविद्युत परियोजना का चरण V निर्माणाधीन है।
- बाँध का मुख्य उद्देश्य पड़ोसी क्षेत्रों में सिंचाई सुविधाओं के साथ जलविद्युत की आपूर्ति करना है।

- कोयना बाँध पश्चिम महाराष्ट्र के साथ-साथ कुछ पड़ोसी क्षेत्रों में जलविद्युत की आपूर्ति प्रदान करता है।
- मानसून के मौसम के दौरान बाढ़ नियंत्रण में बाँध महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जलग्रहण क्षेत्र कोयना नदी को शिवसागर झील से जोड़ता है जिसकी लंबाई लगभग 50 किमी. है।
- कोयना वन्यजीव अभयारण्य जो कि लगभग 55 वर्ग किमी. क्षेत्र को कवर करता है, वर्ष 1985 में अधिसूचित किया गया था।
- वर्ष 2007 में चंदोली राष्ट्रीय उद्यान के साथ कोयना वन्यजीव अभयारण्य को राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण द्वारा सह्याद्री टाइगर रिज़र्व के एक हिस्से के रूप में घोषित किया गया था।
- यह भारत की स्वतंत्रता के बाद शुरू की गई सबसे बड़ी सिविल इंजीनियरिंग परियोजनाओं में से एक है। कोयना जलविद्युत परियोजना महाराष्ट्र राज्य विद्युत बोर्ड द्वारा संचालित है।

### कोयना नदी के विषय में:

- कोयना जो कि कृष्णा की सहायक नदी है, पश्चिमी महाराष्ट्र में सतारा ज़िले के महाबलेश्वर से निकलती है।
- महाराष्ट्र की अधिकांश अन्य नदियों के विपरीत जो कि पूर्व-पश्चिम दिशा में बहती हैं, कोयना नदी उत्तर-दक्षिण दिशा में बहती है।
- यह महाराष्ट्र राज्य के सतारा ज़िले के 'दक्कन इलाके' में 2,036 वर्ग किमी. के क्षेत्र को कवर करती है।
- औसत समुद्र तल से 550-1,460 मीटर की ऊँचाई की सीमा के साथ यह आमतौर पर पश्चिमी घाट क्षेत्र में दक्कन पठार की विशेषता वाले एक भौगोलिक संरचना का प्रतिनिधित्व करती है।
- इस पर कोयना नगर में शिवसागर जलाशय का निर्माण करने वाला 'कोयना बाँध' भी मौजूद है।
- कोयना नदी चार सहायक नदियों द्वारा समर्थित है, जिसमें केरा, वांग, मोरना और महिंद आदि शामिल हैं। इन नदियों पर केरा, वांग और मोरना बाँध मौजूद हैं।

## 35वां 'सूरजकुंड अंतरराष्ट्रीय शिल्प मेला'

- 35वां 'सूरजकुंड अंतरराष्ट्रीय शिल्प मेला-2022' का आयोजन 19 मार्च से 4 अप्रैल, 2022 तक हरियाणा के फरीदाबाद में किया जा रहा है।
- यह मेला हर साल फरवरी के महीने में आयोजित किया जाता है; हालांकि इस साल कोरोना महामारी के कारण शेड्यूल में बदलाव किया गया है। फरीदाबाद में यह वार्षिक मेला आखिरी बार वर्ष 2020 में आयोजित किया गया था।

### प्रमुख बिंदु

- मेले का आयोजन सूरजकुंड मेला प्राधिकरण और हरियाणा पर्यटन द्वारा केंद्रीय पर्यटन, कपड़ा, संस्कृति और विदेश मंत्रालय के सहयोग से किया जाता है।
- स्वदेशी तकनीकों का इस्तेमाल करने वाले कुशल कारीगरों के पूल को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 1987 में मेले की शुरुआत की गई थी, लेकिन ये लोग सस्ते मशीन-निर्मित उत्पादों के कारण पीड़ित थे।
- इस मेले को वर्ष 2013 में अंतरराष्ट्रीय स्तर के मेले में अपग्रेड किया गया था।
- सूरजकुंड मेला भारत के हस्तशिल्प, हथकरघा और सांस्कृतिक विरासत की समृद्धि और विविधता को प्रदर्शित करता है, साथ ही यह दुनिया का सबसे बड़ा शिल्प मेला भी है।
- वर्ष 2022 के लिए 'थीम स्टेट' जम्मू और कश्मीर और 'पार्टनर नेशन' उज्बेकिस्तान है।

Swadeep Kumar